eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्यपरक शिक्षा की उपादेयता

डॉ0 बॉबी यादव[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, कु0मा0रा0म0 स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर उ0प्र0

Received: 15 May 2025 Accepted & Reviewed: 25 May 2025, Published: 31 May 2025

Abstract

मूल्यपरक शिक्षा वस्तुतः शैक्षिक वातावरण में विद्यार्थियों को प्रदान की जाने वाली मूल्य आधारित संस्कारों से ओतप्रोत शिक्षा है जो आज के वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण के दौर में, जहां अस्तित्ववादी एवं वैयक्तिकता संपन्न विचारों से ओतप्रोत सामाजिक व्यवस्था में शिक्षार्थियों को बेहतर नागरिक बनने की ओर अग्रसर करती है वहीं बेहतर सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था स्थापित करने में भी योगदान देती है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए भारत में केंद्रीय तथा राज्य सरकारें अपने अंतर्गत आने वाले शैक्षिक संस्थानों में लागू किए जाने वाले पाठ्यक्रमों में अनेक प्रकार के बदलाव कर रही हैं वहीं इसका असर व्यापक समाज में भी परिलक्षित हो रहा है, जिसकी बानगी नई शिक्षा नीति में भी देखने को मिलती है।

बीजशब्द– मूल्यपरक शिक्षा, वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण, संस्कार, संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था, पाठ्यक्रम, नैतिक मूल्य, मानवीय सभ्यता।

Introduction

मूल्यपरक शिक्षा वस्तुतः शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षार्थियों एवं सम्पूर्ण परिवेश में नैतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना है। यह निश्चित तौर पर शिक्षण एवं अध्यापन के दौरान इस प्रकार का अकादमिक माहौल सृजित करती है जिससे सशक्त एवं सर्वसुलभ शैक्षिक वातावरण तैयार होता है जो विद्यार्थियों को जीवन भर उनके सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों को बेहतर तरीके से विकसित करने में अभिवृद्धि करती है। मूल्यपरक शिक्षा को आज के समय में पुष्पित, पल्लवित एवं विकसित करना अत्यावश्यक है ताकि बेहतर कल की ओर उन्मुख हुआ जा सके।

यही कारण है कि भारत सरकार द्वारा हाल ही में लागू की गई नई शिक्षा नीति में इस प्रकार के विचारों को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है जो निश्चित तौर पर मूल्य आधारित वैचारिकता को उसका सम्मानजनक तथा उचित स्थान प्रदान करने का प्रयास है। आज के समय में न केवल भारतीय समाज अपितु वैश्विक समाजों में भी नैतिक मूल्यों का अधरूपतन हो रहा है जिसे मूल्यपरक एवं मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से काफी हद तक रोका जा सकता है। किसी भी समाज की व्यवस्था को बनाए रखने में मूल्यों के प्रसार का व्यापक योगदान रहता है।

ये मानव मूल्य ही हैं जिन्होंने सहस्राब्दियों से मानव सभ्यता एवं संस्कृति को सकारात्मकता की और उन्मुख करते हुए, इसे विकास के उच्चतम शिखर की तरफ लेकर जाते रहे तथा यह बेहतर की ओर अग्रसर होती गई एवं भविष्य में भी जिस समतामूलक 'वसुधैव कुटुंबकम' की कल्पना की जा रही है उसके मूलाधार की जड़ भी निश्चित तौर पर मानवीय मूल्यों में ही समाहित है। जहां तक भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की बात है तो इसमें संस्कारों को काफी अधिक महत्व दिया गया है। यह संस्कार वस्तुतरू मानवीय मूल्यों पर ही आधारित है एवं इन्हें मानवीय एवं नैतिक मूल्यों का परिष्कृत भारतीय संस्करण भी कहा जा

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

सकता है। भारतीय समाजों में किसी भी बच्चे के जन्म लेते ही उसे संस्कारवान बनाने का प्रयास किया जाता है एवं जीवन के प्रत्येक कदम में उसे संस्कारों की शिक्षा दी जाती है।

समकालीन संदर्भ में देखा जाए तो भारतीय युवा अत्यंत दिग्भ्रमित प्रतीत होता है। उसके जन्म लेने से ही उसका संघर्ष आरंभ हो जाता है तथा यह चुनौती शनै शनै विकराल रूप लेती जाती है। सवा अरब से अधिक जनसंख्या वाले भारतवर्ष में भारतीय युवा के समक्ष रोजगार, सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतिस्थापना, पारिवारिक उत्तरदायित्व आदि जिम्मेदारियां मुहँ बाए खड़ी रहती है। भारतीय समाज में बालक के पैदा होते ही उसके ऊपर भविष्य का भार लाद दिया जाता है जिस कारण वह जीवन भर स्वयं को उसके नीचे दबा हुआ महसूस करता है। थोड़ा बड़ा होने पर जब वह युवावस्था में आता है तो बेहतर भविष्य की चुनौतियाँ उसकी प्रतीक्षा कर रही होती हैं। इस सामाजिक दबाव तथा किसी भी कीमत पर सफलता प्राप्त करने की होड़ के कारण अनेक बार युवा पथभ्रष्ट हो जाते हैं तथा गलत रास्ते की ओर बढ़ते चले जाते हैं। आजकल तमाम राजनीतिक आंदोलनों, शैक्षिक आंदोलनों, रोजगार के लिए किए जाने वाले आंदोलनों आदि में युवाओं द्वारा की जा रही हिंसा इसकी परिचायक है। युवा वर्ग को यदि कोई चीज पथभ्रष्ट होने से रोक सकती है तो वह है– शैक्षिक संस्थानों में मूल्यपरक शिक्षा।

यद्यपि बालकों को नैतिक शिक्षा देने का दायित्व उसके जन्म लेते ही उसके परिवार वालों, नाते–रिश्तेदारों, पास–पड़ोसियों और समाज के प्रबुद्ध वर्गों का होता है तथापि गरीबी, अशिक्षा, जहालत आदि से ग्रस्त हमारे देश में इसकी अधिक उम्मीद करना अति–आशावान होने के समान है। यह सामाजिक दायित्व धीरे धीरे राष्ट्रीय कर्तव्य में तब्दील हो जाता है तथा वहां शासन स्तर से इसे शैक्षिक संस्थानों की तरफ मोड़ दिया जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि सुशिक्षित एवं बौद्धिक भारतीय शिक्षक वर्ग निरूसंदेह अपने कर्तव्य को अपनी सीमाओं में रहते हुए पूरा करने का भरसक प्रयास करते हैं परंतु उन्हें अपने इस लक्ष्य की ओर बढ़ने में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

वैश्वीकरण एवं भूमंडलीकरण के दौर में जहां सामाजिक सीमाओं का दायरा संकुचित होता जा रहा है और परिवार आणविक होते जा रहे हैं तथा आधुनिक युवा आत्ममुग्ध होकर स्वयं के दायरों को संकुचित करता जा रहा है वहां ऐसे माहौल में इस प्रकार के युवा वर्ग को भटकाव से बचाने के लिए यह आवश्यक है कि उसे शिक्षा प्राप्ति के प्रत्येक स्तर पर मूल्यपरक शिक्षा के साथ–साथ माहौल भी प्रदान किया जाए ताकि वह सकारात्मक मानसिकता के साथ नैतिक दृष्टिकोण अपनाते हुए भविष्य के प्रति आशावान होकर अपने जीवन का मार्ग प्रशस्त कर सकें। इस प्रकार के युवा जो मूल्यपरक विचार, नैतिक दृष्टिकोण, सामाजिक उत्तरदायित्व, वैयक्तिक जिम्मेदारी आदि से ओत–प्रोत होते हैं वह किसी भी राष्ट्र के निर्माण के मानव संसाधन का मूलाधार बनते हैं तथा न केवल उस देश अपितु समस्त मानवता के कल्याण के लिए उपादेय होते हैं।

मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने पर जहां विद्यार्थी बेहतर प्रकार से पढ़ाई कर पाते हैं वहीं विद्यालयों में भी शांतिपूर्ण माहौल बनता है। इससे अंतर वैयक्तिक व्यवहार में अभिवृद्धि तो होती ही है साथ ही स्व–नियंत्रित व्यवहार भी विकसित होता है एवं विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच एक बेहतर समन्वय स्थापित होता है एवं इसमें अभिभावकों की भूमिका भी उभर कर आती है। मूल्यपरक शिक्षा एक त्रिकोण की भांति कार्य करती है। इसका मूलाधार तो निश्चित तौर पर शैक्षिक संरचना होती है परंतु अध्यापक, विद्यार्थी और अभिभावक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

इस त्रिकोण के तीन बिंदुओं की तरह अपनी भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं। इनकी आपसी अन्योन्य–क्रिया के संश्लेषण से शैक्षिक संस्थानों में एक आत्मिक माहौल उत्पन्न होता है, साथ ही वृहत्त समाज में भी इसके गुणों का प्रसार होता है एवं एक सुव्यवस्थित एवं बेहतर सामाजिक संरचना विकसित होती चलती है।

यह त्रिकोण केवल द्विआयामी नहीं अपितु त्रिआयामी रूप प्राप्त करता है जिसके ऊपरी बिंदु – जो बेहतर नैतिक सामाजिक व्यवस्था का परिचायक है– की तरफ, यह तीनों बिंदु प्रसरित होते हैं। इस प्रकार मूल्यपरक शिक्षा न केवल शैक्षिक संस्थानों में बेहतर नैतिक माहौल सृजित करती है अपितु वह तो समाज में भी इसे प्रसरित करने की ओर अग्रसर होती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वे अभिभावक, छात्र, अध्यापक और शैक्षिक संस्थानों के अनुषंगी कार्मिक वर्ग भी वस्तुतः समाज के ही अंग हैं तथा अपने–अपने संस्थानों में उन्हें प्राप्त नैतिक मूल्यों को ग्रहण कर, वे उसे वृहत समाज में प्रसारित करते हैं।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि मूल्यपरक शिक्षा केवल शैक्षिक संस्थानों में ही माहौल को बेहतर नहीं करती अपितु सामाजिक व्यवस्था के उन्नयन की ओर भी अग्रसर होती है। इस प्रकार हम मूल्यपरक शिक्षा को समस्त मानवीय नैतिक मूल्यों के प्रारंभिक स्रोत के रूप में भी देखा जा सकता है तथा समाज एवं शासन का दोनों का यह कर्तव्य है कि इस अतिमहत्वपूर्ण प्रारंभिक प्रसार–आधार को कतई नजरअंदाज नहीं किया जाए एवं इस तरफ विशेष कार्य–नीति बनाते हुए काफी अधिक ध्यान दिया जाए ताकि देश के नागरिकों को उनके विकसनशील अवस्थाओं में ही नैतिक मूल्यों से ओत–प्रोत किया जा सके जिससे वह भविष्य में ज्यादा बेहतर नागरिक बन सके एवं उन्हें केवल अपने अधिकारों का ही नहीं अपितु राष्ट्रीय कर्तव्यों का भी भान रहे एवं वे अपने देश के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, बौद्धिक विकास की तरफ ज्यादा बेहतर तरीके से अग्रसर हो सकें।

हाल ही के समय में इसी प्रकार का एक प्रयोग जो राज्य स्तर पर किया गया है अत्यंत प्रासंगिक है। वर्तमान की दिल्ली सरकार ने अपने अंतर्गत आने वाले राजकीय विद्यालयों में 'हैप्पीनेस करिकुलम' नाम पाठ्यक्रम को लागू किया है। यह पाठ्यक्रम न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी काफी चर्चित रहा है और विश्व के तमाम प्रसिद्ध राजनीतिक व्यक्तित्वों, शिक्षाविदों, समाजशास्त्रियों आदि ने इसकी भूरी भूरी प्रशंसा की है एवं अनेक शोधार्थियों ने इसके विविध पहलुओं पर शोध कार्य भी किए हैं। भारत सरकार के अंतर्गत आने वाले मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने भी विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा की प्रवृत्ति के व्यापक प्रयास किए हैं। मूल्यपरक शिक्षा के पाठ्यक्रम में समाहित किए जाने वाले महत्वपूर्ण विषय हैं आपसी समन्वय, उत्तरदायित्व, प्रसन्नता, सादगी, आपसी एकता, सुख एवं शांति, आदर एवं सम्मान, सहनशीलता, सच्चाई, स्वतंत्रता एवं विनम्रता।

मूल्यपरक शिक्षा को न केवल विद्यालयों के पाठ्यक्रम में अपितु शिक्षक प्रशिक्षण केंद्रों के पाठ्यक्रम में भी शामिल किया गया है ताकि शिक्षकों को मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके एवं उन्हें उन तकनीकों से अवगत करावाया जा सके जिससे वे विद्यार्थियों को मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने की ओर उन्मुख हो सकें। इस प्रकार के पाठ्यक्रम स्वयं में मूल्यपरक शिक्षा को समाहित किए रहते हैं एवं इनका लक्ष्य वृहत समाज के लिए बेहतर नागरिक बनाने का प्रयास रहता है। मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षकों का शैक्षिक उपागमों के प्रति जागरूक रहना भी अत्यावश्यक है क्योंकि यदि शिक्षकों को यही नहीं पता होगा कि उन्हें क्या पढ़ाना क्या है और किस तरीके से पढ़ाना है तो लक्षित उद्देश्य प्राप्त करना अत्यंत

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 05, May 2025

कठिन है। सर्वप्रथम शिक्षकों को यह जानना महत्वपूर्ण होता है कि विद्यार्थियों को क्या प्रेषित किया जाना है जो उन्हें मूल्यपरक शिक्षा के प्रशिक्षण के माध्यम से ज्ञात करवाया जाता है। साथ ही शिक्षकों को अपने रोजमर्रा के जीवन में मूल्यों का अनुपालन किया जाना भी आवश्यक है ताकि वे छात्रों के लिए रोल मॉडल बन सकें।

अंततः हम कह सकते हैं कि शैक्षिक संस्थान कोई 'विलगित टापू' नहीं होते हैं अपितु समाज के भीतर ही उसके अन्योन्य अंग होते हैं। सामाजिक माहौल का इन पर जहां असर होता है वहीं इनमें दी जाने वाली शिक्षा का समाज पर भी असर होता है और यह आपसी अन्योन्य–क्रिया संश्लेषण में कार्य करती है। यहां प्रदान की जाने वाली मूल्यपरक शिक्षा न केवल शिक्षार्थियों के लिए मूल्यवान होती है अपितु वृहत समाज के लिए भी यह उपादेय होती है तथा इससे उन्हें न केवल शैक्षिक माहौल को बेहतर बनाने में सहायता मिलती है अपितु व्यापक समाज में भी सकारात्मकता एवं नैतिक मूल्यों का विकास एवं प्रचार–प्रसार होता है जो न केवल समाज अपितु संपूर्ण राष्ट्र के लिए भी लाभदाई है।

संदर्भ ग्रंथ–

1- Radha Mohan& Teacher Education& PHI, N- Delhi, 2019
2- Dr- N- Venkataiah (Ed-) &Value Education& APH Publishing, N- Delhi 2007
3- Dr- K- Subramanian& Value Education& Shri Ram Krishna Math, Vivekanand Kendra Prakashan Trust, Chennai, 2010
4- N- Arumugan] Mohana, Palkani& Value based education& Saras Publication] Nagercoil, Tamilnadu, 2014
5- Dr- N- Venkataiah & Dr- N- Sandhya & Research in Value Education& APH Publishing, N- Delhi, 2008
6- Dr- Yojna Patil & Value Education: Need of the hour& Pasaaydaan Foundation, 2015